सतीनाथ षडंगी

भगवान का सवाल

यह तब की बात है जब मैं छोटा था और भगवान की बड़ी इज़्ज़त करता था। मेरे मन में एक सवाल आया कि अगर एक गाँव के कुम्हार भगवान से विनती करें कि पानी दो-तीन दिन और न बरसे। ताकि उनके कच्चे घड़े सूख जाएँ, भट्टी में पक जाएँ। और अगर उसी गाँव के किसान लोग भगवान से यह मनाएँ कि जल्दी से बारिश हो जाए ताकि उनकी फसल अच्छी हो तो भगवान जी क्या करेंगे?

मैंने यह सवाल अपने कई साथियों से पूछा। कइयों ने कहा कि भगवान ऐसी बारिश कर देंगे कि किसान के खेत में पानी पड़े पर कुम्हार के घड़े सूखे के सूखे रहें। मैंने यह तो देखा था कि सड़क के इस पार बारिश हो रही है और उस पार नहीं। पर ऐसा बहुत कम समय के लिए होता है। इतने में तो कुम्हारों के घड़े सूखने से रहे।

कइयों ने कहा कि भगवान ऐसी बातों पर ध्यान देने लगे तो फिर वे और कुछ कर ही नहीं पाएँगे। कुछ दोस्तों ने तो यह भी कहा कि जो ज़्यादा चढ़ावा चढ़ाएँगे या ज़्यादा प्रार्थना करेंगे बारिश का फैसला उन्हीं के पक्ष में जाएगा। पर यह भी मुझे जँचा नहीं, क्योंकि जिस भगवान की मैं इज़्ज़त करता था वे इतने टुच्चे नहीं हो सकते थे कि जिधर दो पेड़े ज़्यादा हुए उधर की माँग पूरी कर दी।

धीरे-धीरे मेरे मन में भगवान के बारे में और भी सवाल कुलबुलाने लगे। एक सवाल बड़ी ज़ोर से आया कि अगर भगवान ने इंसानों को बनाया तो साथ-साथ दाँत का दर्द क्यों दे दिया, मच्छर क्यों पैदा किए और सारे विटामिन कड़वी चीज़ों में क्यों डाल दिए?

बचपन में माँ ने स्वामी विवेकानन्द के बारे में किताब से पढ़कर एक कहानी सुनाई थी। उस कहानी कीँ गने

एक बात मुझे लग गई। वह यह कि रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानन्द से कहा था कि सच्चे दिल से और दूसरों के फायदे के लिए भगवान से कुछ भी माँगने पर प्रार्थना पूरी हो जाती है। मैंने माँ से पूछा, “कुछ भी मिल सकता है, माँगने पर?” माँ ने कहा, “हाँ, बशर्ते वह अपने फायदे के लिए न हो और सच्चे दिल से माँगा जाए।” इसके बाद मैं पूरी तरह से जुट गया। सच्चे दिल का मतलब मैंने यह लगाया कि जिस वक्त पूजाघर में भगवान के सामने प्रार्थना करें उस समय और कुछ न सोचें। शुरू-शुरू में यह मुश्किल था। मैं दिल सच्चा करने पर जितना ज़ोर लगाता उतना ही दूसरी बातें – दोस्ती-दुश्मनी की, स्कूल-घर की, खेल के मैदान की, पतंग लूटने और कँचे हारने की – मेरे मन में आ जातीं। पर मैंने इसका तोड़ निकाल लिया। मैं पहले देर तक भगवान के चित्र को देखता रहता फिर आँख बन्द किए हुए उसी चित्र पर खासकर भगवान के चेहरे पर ध्यान टिकाए रहता।

हर दिन मैं तीन चीज़ों के बारे में प्रार्थना करता था जो मेरे मन को सबसे ज़्यादा हिला रही थीं।

उन दिनों हर दिन अखबार में और रेडियो पर समाचार आता था कि अमरीकी सेना वियतनाम के लोगों पर जुल्म ढा रही है। हमारे पास-पड़ोस में लोग बातें करते थे इसके बारे में। इसके अलावा उसी दौरान दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी कई जगह लड़ाई-झगड़े हो रहे थे। मेरी पहली प्रार्थना थी कि हे भगवान! आप चाहो तो सब कुछ कर सकते हैं सो ऐसा कुछ करो कि दुनिया में लड़ाई-झगड़े ना हों। लोग एक दूसरे का खून न बहाएँ, एक दूसरे को तकलीफ न दें।

मैं नहीं जानता था कि यह प्रार्थना पूरी करना भगवान के लिए कितना मुश्किल है। हाँ अहसास था कि काफी मुश्किल होगा। पर मुझे माँ की बातों पर भरोसा था कि भगवान मुश्किल से मुश्किल सवाल को भी हल कर सकते हैं।

मेरी दूसरी प्रार्थना थी कि स्कूल जाते वक्त सड़क किनारे जिन बच्चों को मैं हर दिन देखता था, वे भूखे न रहें। उस समय मुझे लगता था कि यह तो भगवान चुटकी बजाते कर देंगे। बाद में जब मैंने पूरी दुनिया का व्यापार इन बच्चों को भूखा सुलाने के लिए चलता देखा, तब जाकर मैं समझा कि यह प्रार्थना भी पहली वाली जैसी मुश्किल है।

भगवान से मेरी तीसरी प्रार्थना यह थी कि मेरा बड़ा भाई जो उस समय बहुत ज़्यादा शराब पी रहा था, पीना बन्द कर दे। यह सवाल भी कोई मेरे फायदे के लिए नहीं था। मैं यह नहीं जानता था कि शराब में खराबी क्या है, लेकिन मुझे मालूम था कि बड़े भाई के शराब पीने से माँ कितनी दुखी होती है। यह प्रार्थना मैं अपनी माँ के लिए कर रहा था।

मैं इन तीन प्रार्थनाओं को हर रोज़ सवेरे, सच्चे दिल से भगवान के पास पहुँचाने में लग गया। कई दिन बीत गए। मैं धीरज धरे रहा। हफ्ते बीत गए, फिर महीने बीत गए। साल भर होने को आया। मैंने इन तीनों बातों में कोई फर्क नहीं देखा। उलटे हालात और भी बदतर होते देखे तो मेरा मन डोलने लगा।

हालाँकि मैं माँ से भगवान के बारे में कहानियाँ सुनता रहा पर सिर्फ मज़े के लिए। भगवान पर मेरा विश्वास उठने-उठने को था। मैं मानने लग गया था कि या तो भगवान में सब कुछ करने की ताकत नहीं है या उनके पास इतना

वक्त नहीं है कि वे नौ साल के बच्चे के तीन दरख्वास्त सुन लें। फिर मैंने सोचा मेरी बला से और प्रार्थना करनी बन्द कर दी।

भगवान से मोहभंग होने के बावजूद मेरे मन में भगवान के बारे में सवाल आते रहे। मेरी माँ जब इन सवालों से तंग हो जाती तो मुझे यह कहकर चुप करा देती कि भगवान के बारे में ऐसे-वैसे सवाल नहीं करते।

पर भगवान के बारे में सवाल मैं आज भी पूछता फिरता हूँ। जैसे मैं बच्चों से पूछता हूँ, “भगवान कहाँ रहते हैं?” वे आसमान की तरफ उँगली दिखाते हैं, “ऊपर।”

“फिर वे गिरते क्यों नहीं?”

वे कहते हैं, “जादू से।” मैं कहता हूँ, “ठीक है, भगवान तो जादू से उड़ते रहते हैं पर जब वे टट्टी करते हैं तो वह हमारे ऊपर क्यों नहीं गिरती?” टट्टी में जादू रहने की बात मानने वाले वास्तव में उनमें से हैं जो मानते हैं कि भगवान भूतों की तरह पत्थरों, पेड़ों और जानवरों में तो रहते ही हैं, हमारी सोच और मन में भी हैं। अब यह एक बात है जिसको झुठलाना मुश्किल है।

जो दिखते नहीं, जिसे छू नहीं सकते, जो जगह नहीं घेरते, जो चाहें तो अपना वज़न शून्य कर लें ऐसे भगवान हर जगह नहीं हैं यह मैं किस दावे से कह सकता हूँ?

जो कण-कण में भगवान होना मानते हैं उन लोगों के लिए मेरे मन में यह सवाल आता है कि वे बिना शरमाए गुसलखाने में कपड़े कैसे उतारते होंगे। बाद में भले ही आदत पड़ जाए पर शुरू-शुरू में तो गुसलखाने में ठहरे भगवान से शर्म आती होगी!

तो इस तरह भगवान के बारे में मेरे मन में सवालों का उगना जारी रहता है। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे मन में भी भगवान और भूत के बारे में बहुत सारे सवाल होंगे। मेरी मानो तो इन अवैज्ञानिक सवालों को भी चकमक में भेजो। और हाँ मेरे आध्यात्मिक सवालों के जवाब भी तुम्हारे पास हों तो ज़रूर भेजना।